सोलापुर मंडल के विशेष छायाचित्र

पंढरपुर

पंढरपुर में भीमा नदी जिसे चंद्रभागा (अर्ध चंद्राकृति) भी कहा जाता है के तीर पर नौ शताब्दी पुराना काले बैलास्ट पत्थर में बना विठ्ठल और रखुमाई (रुक्मिणी) का निवास स्थान है. मिरज-कुर्डुवाडी के बीच 2 ' 6" छोटी लाइन को बड़ी लाइन में परिवर्तित किया गया है और पंढरपुर-कुर्डुवाडी खंड वर्ष 2001 में यात्री यातायात के लिए कमिशन किया गया है. पंढरपुर स्टेशन भवन की इमारत पंढरपुर के धार्मिक और अध्यात्मिक स्वरुप को ध्यान में रखकर बनाई गई है. मेले के दौरान भारी मात्रा में श्रध्दालुओं की आवाजाही को सुगम बनाने के लिए पंढरपुर स्टेशन पर पीआरएस और 3 यूटीएस काउंटरों के अलावा 12 अतिरिक्त यूटीएस काउंटर खोले गए हैं.

मुंबई से पंढरपुर की दूरी 428 कि.मी. और कुर्डुवाडी से 52 कि.मी. है. पंढरपुर के लिए मुंबई, निजामाबाद, लातुर आदि से सीधी गाड़ियां हैं.

शिर्डी

रहस्यमय संन्यासी, फकीर साईबाबा (1838-1918) ने किशोर अवस्था में पाथरी (परभणी) से शिर्डी में पदार्पण किया. वे एक सुफी के अनुयायी और खुद सुफी थे. वे एक नीम के पेड़ के नीचे धूप और बरसात में ध्यान-धारणा और तपस्या करते थे. उन्होंने मसजिद में अपना निवास बनाया. उसे वे '' द्वारका माई " कहा करते थे. साईबाबा अद्वैत वेदांत में विश्वास करते थे और अग्निकुंड को हमेशा प्रज्वलित रखते थे जिसे '' धुनी " कहा जाता था.

तुलजा भवानी

सोलापुर-उस्मानाबाद महामार्ग पर तुलजापुर में दुर्गा भवानी, शीव की पत्नी का (विकराल रुप में पार्वती) 12 वीं सदी में बना मंदिर पश्चिमी घाट के पादगिरी पर यमुनाचल पहाड़ी पर स्थित है. यह मंदिर 51 शक्तिपीठों में से एक है और इसे तुलजा भवानी मंदिर भी कहा जाता है. यह तीर्थ स्थान प्रस्तावित सोलापुर-उस्मानाबाद-जलगांव रेल लाइन पर है. इस मंदिर में तुलजा भवानी की 1 मीटर उंचाई वाली ग्रेनाइट पत्थर में बनी मूर्ति है जिसकी आठ भुजाएं हैं. भुजाओं में विभिन्न अस्त्र - शस्त्र और मान्यता के अनुसार जिसका उसने मैसूर में वध किया था उस महिषासूर का सर है. तुलजापुर में गुढ़ीपाडवा, मकर संक्रांति और नवरात्र में मेला लगता है. एक दंतकथा के अनुसार भवानी ने शिवाजी महाराज के समक्ष प्रकट होकर स्वयं उन्हें तलवार सौंपी थी जिसने उन्हें अजेय बनाया.

शनि शिंगणापुर

सोनाई या शिंगणापुर यह स्थान अहमदनगर-शिर्डी महामार्ग पर अहमदनगर से 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. जो लोग शिर्डी दर्शन के लिए आते हैं वे शिंगणापुर भी अवश्य जाते हैं. शिंगणापुर में घरों में दरवाजे नहीं है. ऐसी मान्यता है कि सूर्यपुत्र शनि स्वयं यहां के घरों की रक्षा करते हैं.

सोलापुर

व्युत्पतिविषयक धारणा के अनुसार सोला+पुर (सोलह गांव) विश्वसनीय तौर पर कई शिलालेखों में सोनलगी, सोनालपुर या सोनालीपुर का उल्लेख पाया जा सकता है. टिकाऊपन के लिए सोलापुरी चदरें पूरे देश में काफी मशहूर हैं. सोलापुर में मध्यकालीन किला और लिंगायत पंथ के महात्मा सिध्दराम द्वारा निर्मित 12 वीं सदी का सिध्देश्वर मंदिर है. श्रावण मास में तीर्थयात्रियों को पीने का पानी उपलब्ध कराने के लिए सिध्दराम द्वारा बड़ा तालाब खुदवाया था. सोलापुर की जन संख्या 12 लाख है. सोलापुर से 22 कि.मी. दूरी पर नान्नज में सोह न चिड़िया विहार वन है.

रामलिंग

रामलिंग में रेलवे विश्राम गृह का निर्माण तत्कालीन कुर्डुवाडी-लातुर छोटी लाइन (2 ’ 6”) पर येडशी-रामलिंग वन्यजीव विहार वन के मध्य में रामलिंग स्टेशन की बगल में ऊंची पहाडी पर सन 1907 में बारसी लाइट रेलवे के एजेंट और महाप्रबंधक ने करवाया था. इस खंड को बड़ी लाइन में परिवर्तित करके वर्ष 2008 में यात्री यातायात के लिए खोला गया है. वन्य जीव विहार वन में काले हिरण, चिंकारा, भेड़िया,लोमड़ी, लकड़बग्घा, हिरण, भालू और खरगोश आदि जैसे वन्यजीव और 100 से अधिक विभिन्न प्रकार के पक्षी पाए जाते हैं. इस जंगल में धावड, खैर, टीक, चंदन आदि वृक्ष काफी मात्रा में पाए जाते हैं.

दशकों से यहां का रेलवे विश्रामगृह अनुपयुक्त स्थिति में पड़ा हुआ था. इसका हाल ही में पुनरुथान किया गया है और कलात्मक दृष्टि से उसके पुराने जमाने की मनोहरता को बरकरार रखा गया है अब नजदीकी तथा दूर के रेल कर्मचारी और सिविल/पुलिस प्राधिकारी इसमें निवास के लिए काफी संख्या में चले आ रहे हैं. राम द्वारा पूजित " लिंग " यहां पर स्थापित है, इसलिए इस स्थान का नामकरण रामलिंग है. इसी स्थान पर सीता की रिहाई के लिए जटायू ने रावण के साथ लड़ाई की थी. रामलिंग मंदिर गहरें दर्रे में स्थित है.

बार्शी

बार्शी अथवा बाराशिव कुर्डुवाडी-लातुर खंड में कुर्डुवाडी से 35 कि.मी. की दूरी पर स्थित है. बार्शी में परमेश्वर भगवंत अर्थात विष्णू के केवल दो मंदिरों में से एक मंदिर है, जिसका निर्माण ईसवी सन 1245 में किया गया है. बार्शी शहर बार्शी लाइट रेलवे का मूल टर्मिनल था.

गुलबर्गा

इसका मूल नाम कलबुर्गी है. तुघलक के एक ताजिक-पर्शियन अधिकारी हसन गंगू ने बगावत करके अल्लाउद्दीन बहमन शाह की उपाधि प्राप्त की और सन 1347 में बहमनी सल्तनत की अलग राजधानी की स्थापना गुलबर्गा में की. उस समय गुलबर्गा का नाम एहसानाबाद रखा गया. इस शहर में विशिष्ट खंदक सहित एक ऐतिहासिक किला और स्मृतिचिह्न भी है. इसके अलावा गुलबर्गा में जामा मसजिद सहित कई मसजिदें हैं. मध्यकालीन संत शरण बसवेश्वर मंदिर तथा चिस्ति धर्म समुदाय के पूजनीय सुफी संत हजरत ख्वाजा-बंदेनवाज गेसू दराज (1321-1422) की दरगाह भी इस शहर में स्थित है. इसके अलावा स्थानीय सिध्दार्थ विहार ट्रस्ट ने यहां पर शानदार बुध्द विहार का निर्माण किया है. दिसम्बर 2008 में इस विहार का लोकार्पण दलाई लामा द्वारा और जनवरी 2009 में उद्घाटन राष्ट्रपति द्वारा किया गया.

अहमदनगर

इस शहर का नाम बहमनी सल्तनत के चार तरफदारों में से एक अहमद निजाम शाह के नाम से किया गया है. यहां पर निर्मित किला 18 फूट चौड़े और 9 फूट गहरे खंदक से घिरा हुआ है और उसमें एक उठाऊ पूल है. यह किला 19 वीं सदी में ब्रिटिश द्वारा ताबे में लिया गया. पंडित नेहरु, वल्लभभाई पटेल और मौलाना आजाद जैसे राष्ट्रवादी नेताओं को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कई वर्षो तक इस किले में बंदी बनाके रखा गया था. इसी किले में पंडित नेहरु ने " भारत एक खोज " पुस्तक लिखी. अब इस किले का अधिग्रहण भारतीय सेना के बक्तरबंद दल ने किया है. सेना के टैंकों की विश्व में दूसरी सबसे बडी प्रदर्शनी यहां पर है और वह आम जनता के लिए खुली है.

नलदुर्ग किला, उस्मानाबाद

इस किले का निर्माण कल्याणी के चालुक्य के शासनकाल में 12 वीं सदी में किया गया. बहमनी सुलतानों ने 14 वीं और 15 वीं सदी में तथा बीजापुर के आदिल शाह ने 16 वीं सदी में यहां पर विशाल किलेबंदी का निर्माण किया. सन 1613 में इब्राहिम आदिल शाह द्वितीय ने बोरी नदी पर बांध का नि र्माण कर उसका पानी इस किले के "पानी महल" में लाया. इस किले में 115 विशाल बुर्ज हैं.

उजनी बांध

इस बांध का निर्माण कृष्णा नदी की उपनदी भीमा पर दौंड-सोलापुर खंड के जेऊर स्टेशन के पास किया गया है.

गाणगापुर

अनुसूया और अत्री ऋषि को त्रिमूर्ति द्वारा " दिया गया " अर्थात दत्त का मंदिर गाणगापुर में स्थित है. दत्त को हमेशा त्रिमूर्ति अर्थात ब्रह्मा, विष्णू और महेश के अवतार के रुप में दर्शाया जाता है. इसलिए उन्हें दत्तात्रय कहा जाता है. दत्त ने गाणगापुर में भीमा और अमरजा नदी के संगम पर परमोच्च सिध्दि प्राप्त कर ली थी. किंवदन्ती है कि उन्होंने " त्रिपुर रहस्य " उद्घाटित कर उसे परशुराम को सौंप दिया. गाणगापुर तीर्थक्षेत्र दौंड-वाडी खंड पर सोलापुर से 86 कि.मी. की दूरी पर है. यहां पर दत्त जयंती का मेला लगता है.

उसमानबाद वाया डक्ट

रामलिंग विश्रामग्हा